ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

लेयर मुर्गी पालन एवं उनके चूजों का रखरखाव

डा. संजीव रंजन

विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा विज्ञान)
कृषि विज्ञान केंद्र, हरनौत (नालन्दा)

कुक्कुट पालन अल्पावधि में उच्च लाभ प्रदान कराने वाला व्यवसाय है। लघु स्तर पर 'घर के पिछवाड़े' में मुर्गी पालने के दौरान कोई विशेष पूँजी की आवश्यकता नहीं होती है। मुर्गियां घर में बचे हुए गेहूं, चावल व अन्य आनाज के टुकड़े व रसोई का बचा अनाज साथ ही साथ इधर-उधर घूमकर कीड़े-मकोडे आदि से अपना पेट भर लेती है। इनकी देखरेख घर की महिलायें एवं बच्चों द्वारा हो जाती है। इस विधि में देसी मुर्गिया ही पाली जाती हैं जिनमें उत्पादन प्रायः कम होता है।

सामान्यतया मध्यम स्तर पर 'अर्ध सघन' विधि द्वारा मुर्गी पालन में 50-100 तक मुर्गिया पाली जा सकती है तथा इनकी देखरेख हेतु अलग से स्थान की आवश्यकता होती है। अतः इस विधि में आवास एवं आहार हेतु थोड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। उच्च स्तर के अन्तर्गत 'सघन प्रणाली' द्वारा मुर्गियों को तीन विभिन्न श्रेणियों में पाला जा सकता है जिनमें पक्षियो की संख्या 500-1000 से शुरु होकर अत्यन्त उच्च स्तर तक किया जा सकता है जोकि पूर्णतया व्यावसायिक रूप से प्रबन्धित होता है।

सामान्यतया मुर्गी पालकों को मुर्गी पालन के दौरान आवास निर्माण, चूजा प्राप्ति, आहार, फार्म प्रबन्ध पर मजदूर व तकनीकी कार्यकर्ता, बिजली व पानी तथा उपकरणों पर खर्च का पूरा ब्योरा रखने के साथ-साथ अण्डा उत्पादन से प्राप्त धन, खाद, व पुराने स्टाक की बिक्री से प्राप्त धन का पूरा ब्योरा रखना चाहिए। अण्डे वाली मुर्गियों में अपनी पठोर अवस्था तक आने पर 7.5 कि0ग्राम तथा उसके बाद वर्ष भर के उत्पादन के लिये 40-42 कि0ग्रा0 प्रति मुर्गी की दर से आहार की जरूरत पड़ती है तथा एक मजदूर 1000 मुर्गियों की देखभाल अच्छी तरह कर सकता है। इन अवयवों पर होने वाले खर्च को वर्तमान समयानुसार आका जा सकता है। इसके अलावा बिजली,पानी तथा उपकरण पर वर्तमान समय में लगभग 20-22 रू0 प्रति मुर्गी का खर्च आ सकता है। वर्ष के अन्त में यदि फार्म प्रबन्ध नियमानुसार किया गया हो तो, प्रति वर्ष 8-10 रू0 प्रति मुर्गी लाभ प्राप्त किया जा सकता है जो कि किसानों द्वारा किये गये आवर्ती तथा अनावर्ती खर्चों को ध्यान में रख कर निकाला गया है।

मुर्गियों के पालन में अन्य व्यवसायों की अपेक्षा कहीं अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती है। प्रारम्भ में कुक्कुट पालन थोड़ी मुर्गियों से शुरू करके एक सहयोगी धन्धे के रूप में अपनाना चाहिए। अनुभव प्राप्त करने के उपरान्त अपनी क्षमता के अनुसार मुर्गी पालन को एक बड़े उद्योग का रूप दे सकते हैं।

कुक्कुट आवास हेतु स्थान के चुनाव के समय कई ध्यान रखने योग्य बाते हैं जो निम्न है-

- भूमि में पानी का जमाव न हो।
- कुक्कुट गृह का स्थान एक शांत वातावरण में होना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- बाजार तक उत्पादनों के परिवहन हेतु तथा व्यवसाय की सामग्री के परिवहन की अच्छी सुविधाये उपलब्ध होनी चाहिए।
- विद्युत तथा जल आपूर्ति के पर्याप्त साधन उपलब्ध होने चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सुविधा उपलब्ध होना आवश्यक है। कुक्कुट विषेषज्ञों की सहायता अगर संभव हो तो प्राप्त करना अच्छा रहेगा।
- कुक्कुट बीमा, दुर्घटना के समय कुक्कुट व्यवसायी की सहायता प्रदान करती है। अतः मुर्गी बीमा की सुविधा इस व्यवसाय के लिए अत्यधिक लाभप्रद है। साथ साथ राष्ट्रीयकृत बैंक या ऋण दात्री संस्थान का समीपस्थ होना लाभप्रद होगा।
- योग्य विशेषज्ञ द्वारा बीमारी से मरे पक्षियों के रोग का पता लगाना तथा उपयुक्त रीति से निष्कासित करने का प्रबन्ध करवाना चाहिए।

सामान्यतया मुर्गियों का पालन तीन अवस्थाओं में किया जाता है, जो कि निम्न प्रकार हैं:

- ब्रूड़िंग अवस्था
- पठोर अवस्था
- वयस्क अवस्था

ब्रूड़िंग अवस्थाः- इन्क्यूबेटर से चूजा प्राप्त होने के बाद उसे पालने की क्रिया को 'ब्रूड़िंग' तथा 'रियरिग' कहते है। इस अवस्था का समय एक दिन से लेकर 5 या 8 सप्ताह तक रहता है। समय की अवधि मौसम और जाति के अनुसार निर्धारित की जाती है। चूजे प्राप्त करने से पहले ही ब्रूडर गृह तैयार कर लेना चाहिए। इस दौरान जिन विशेष बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए वह निम्न प्रकार हैः-

- चूजा गृहों की उचित साफ-सफाई तथा जीवाणु रहित करना।
- मकान में वायु का पूरा प्रबन्ध हो तथा वैन्टीलेशन ठीक हो।
- दाने तथा पानी के बर्तनों का उचित मात्रा में व्यवस्थित ढंग में लगाना।
- शुरू के 1-2 दिनों में अखबार या कोरूगेटिड पेपर बिछा देना।
- कमरे के फर्ष पर चारों कोनों को गोलाकार करना जिससे चूजे एक जगह इकट्ठे न हो जायें।
- चिक गार्ड का प्रयोग करना।
- मौसम व चूजों की उम्र के अनुरूप ब्रूडर कमरों तथा होवर के नीचे उचित तापक्रम को बनाये रखना। नर व मादा की पहचान होते ही उनका अलग-अलग पालन करना उचित रहेगा।

तापक्रम के मापदण्ड इस प्रकार से हैः-

पहले सप्ताह में ब्रूडर के नीचे का तापक्रम 95 डिग्री फा0 रखा जाता है जोकि 5 डिग्री फा0 प्रति सप्ताह के हिसाब से घटाकर 70 डिग्री फा0 6 सप्ताह की अवस्था तक लाया जाता है। उसके पष्चात यदि जरूरत पड़े तो 2 सप्ताह और इसी तापक्रम पर ब्रूड़िंग की जा सकती है। अत्यधिक गर्मियों में कोल्ड ब्रूड़िंग की जा सकती है , क्योंकि वातावरण का ताप इतना अधिक होता है तथा किसी

अन्य विधि से ताप देने की जरूरत ही नहीं पड़ती। एक दिन की अवस्था से 8 सप्ताह तक चूजों को फर्श पर आधा वर्ग फुट जगह मिलनी चाहिए।

चूजों को ब्रूड़िंग के दौरान हावर के नीचे दाना ,पानी तथा उचित तापमान मिल सके तथा चूजे दिशा भ्रमित न हो जाये इस के लिए चिक गार्ड का प्रयोग किया जाता है। प्रथम के कुछ दिनों के लिए ब्रूड़र/हावर के चारों ओर टाट की बोरी/गत्ता/एसबेस्टस या धातु चादरों के चिक गार्ड का प्रयोग किया जाता है। चूजे जब आहार , पानी के बर्तनों या उष्मा प्राप्त करने के लिए घूमना प्रारम्भ कर देते है तो चिक गार्ड का क्षेत्र बढ़ा देना चाहिए। चिक गार्ड आमतौर पर हावर के किनारों से 0.9 से 1.2 मीटर दूर रखना चाहिए। प्रतिदिन यह दूरी बढ़ाकर अधिकतम 1.5 मीटर कर दी जाती है। आमतौर पर गर्मियों में 7-10 दिन तथा सर्दियों में 14-15 दिन बाद इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

दाना, पानी तथा रहने के लिए स्थान की व्यवस्थाः-

शुरू के 1-2 दिनों तक चूजों को महीन पिसी मक्का तथा विटामिन मिश्रण मिलाकर देना चाहिए, एक दिन से 8 सप्ताह तक फर्श पर चूजों को 1/2 वर्ग फूट जगह मिलनी चाहिए। दाने के बर्तनों में चूजों को शुरू के 2 सप्ताह तक प्रति चूजे 1 इंच, 2 से 6 सप्ताह तक 2 इंच, तथा 6 सप्ताह के बाद 3 इंच, के हिसाब से स्थान दिया जाना चाहिए।

पानी के लिए प्रति मुर्गी को 2 सप्ताह तक 1/4 इंच , तथा 3 से 8 सप्ताह तक 1/2 इंच , स्थान मिलना चाहिए। चूजों को रोज ही ताजा तथा साफ पानी , बर्तन साफ करके दिया जाना चाहिए। एक बात और जो अत्यन्त आवश्यक है, वह यह कि दाने तथा पानी के बर्तन इस तरह से लगाने चाहिए कि चूजे हावर के अन्दर तथा परिधि के बाहर दोनों ही जगह दाना, पानी प्राप्त कर सकें। चूजों को यदि 24 घण्टे हल्की रो शनी दी जाये तो उन्हें दाने-पानी के बर्तन पहचानने में मदद मिलती है। इसके अलावा रोशनी मिलने से चूजे किन्हीं बाहरी कारणों से घबराकर एक दूसरे के ऊपर इकट्ठे होकर मरने से बच जाते है तथा हल्की रोशनी चूजों की शारीरिक वृद्धि में भी सहायक होती हैं।

पठोर अवस्थाः आठ सप्ताह की उम्र पूरी कर लेने के बाद चूजों के पर्याप्त मात्रा में पर निकल आते है तथा वातावरण के प्रतिकूल प्रभाव से उनकी रक्षा करना उतना कठिन नहीं होता। यह अवस्था 9 सप्ताह से शुरू होकर 16/20 सप्ताह तक की होती है। इस दौरान प्रति मुर्गी को फर्श पर 1.75 से 2.00 वर्ग फुट जगह मिलनी चाहिए। दाने पानी की उचित मात्रा तथा इनके बर्तनो में मिलने वाली जगह का भी उचित प्रबन्ध कर लेना चाहिए तथा इन बर्तनों को फैला कर रखना उचित रहेगा , जिससे पैकिंग की वजह से कमजोर चूजों को परेशानी न हो। सामान्यतः ग्रोवर्स को प्रकाश की जरूरत नहीं पड़ती परन्तु यदि चोंच मारने का भय हो तो छोटा बल्ब लगाना उचित होता है। आठ सप्ताह की उम्र से ग्रोवर मैस देना शुरू कर देना चाहिए। दाना खाने के लिए प्रति मुर्गी 2.5 इंच से 3.0 इंच स्थान तथा पानी के लिए 3/4 इंच से लेकर 1 इंच का स्थान मिलना चाहिए। दाने की बरबादी को कम करने के लिए उचित उपाय करने चाहिए। इसके लिए प्रति पठोर मुर्गी को कुल 100 ग्राम दाना दिन में दो बार में दिया जा सकता है तथा ग्रिल वाले दाने के बर्तन का इस्तेमाल किया जाता हैं।

चोंच काटना (डिबीकिंग) : मुर्गिया दाना ठीक से खा सकें और दाने की बरबादी भी कम की जा सकें; इसके अलावा मुर्गियों में आपस में लड़ने के कारण चोंच मारने से शारीरिक क्षति भी न हो

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सकें; इसके लिए चूजों की चोंच काटी जाती है। सामान्यतः चूजों की चोंच 6-8 सप्ताह की उम्र पर काटी जाती है। यदि जरूरत महसूस हो तो पठोर मुर्गियों को वयस्क अवस्था में आने से कुछ सप्ताह पूर्व भी चोंच काटी जा सकती है। वयस्क मुर्गियों की 14-16 सप्ताह के मध्य चोंच काट देनी चाहिए। चोंच काटने के तुरन्त बाद चोंच को पोटे शियम परमैंगनेट के घोल में डुबा कर मुर्गियों को कमरों में छोड़ देना चाहिए। चोंच काटने का कार्य अनुभव प्राप्त व्यकित को ही देना चाहिए।

वयस्क अवस्था में मुर्गियों का पालन व देखभालः पठोर मुर्गियों को अण्डे वाले मुर्गी घरों 16-18 सप्ताह के मध्य में पहुचा देना चाहिए। बाहरी कीड़ों को मारने के लिए पठोर मुर्गियों को अण्डे वाले मुर्गी घरों में डालने के कुछ दिन पूर्व उनकी डस्टिंग की जाती है तथा फर्श पर पाली गई पठोर मुर्गियों को कीड़े मारने वाली दवाई भी पिलाई जाती है। कृमिना शक दवाओं के उपयोग से मुर्गियों पर पड़ने वाले कुप्रभाव को दूर करने के लिए उन्हें 3-4 दिनों तक विटामिन तथा मिनरल दिये जाने चाहिए गहरी बिछाली पद्धति में मुर्गियों को रहने के लिए फर्श पर 2 से 2.5 वर्गफुट , खाने के लिए 3-4 इंच तथा पानी पीने के लिए 2 इंच जगह देना आवश्यक होता है।

आहार एवं प्रकाश व्यवस्थाः ग्रोवर मैस का लेयर मैस में परिवर्तन धीरे-धीरे किया जाना चाहिए। 18 सप्ताह की उम्र के बाद प्रति 200 पक्षियों के पीछे एक डिब्बे में ग्रिट रखना भी उचित रहेगा। मुर्गियों को स्थानीय उपलब्धि के अनुसार संतुलित एवं पौष्टिक आहार पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराना आवश्यक है जिसमें 16-18 प्रतिशत प्रोटीन, व 2800-2900 कि0 कैलौरी प्रति कि0 ग्रा0 ऊर्जा, 4 प्रतिशत कैलसीयम, 0.8-0.9 प्रतिशत फास्फोरस तथा 0.5 प्रतिशत नमक होना चाहिए। वयस्क मुर्गी नस्ल, आयु एवं मौसम के अनुसार 100-120 ग्राम आहार खाती है। मुर्गिया प्रकाश के प्रति काफी संवेदनशील होती है। इन्हें 18 सप्ताह की उम्र पर 14 घंटे प्रकाश की आवश्यकता होती हैं। इसके पश्चात प्रति सप्ताह 30 मिनट प्रकाश बढ़ाते रहना चाहिए। जब मुर्गियों के लिए दिन का प्रकाश सम्मिलित करते हुए 17 घंटे प्रकाश अवधि हो जाये तो इससे अधिक बढ़ाने की आवश्यकता नहीं होती। अण्डे वाले मुर्गी घरो में दड़बों का प्रयोग उचित रहेगा , एक दड़बा 5-6 मुर्गियों के लिए काफी होता है। सामुदायिक दड़बे भी इस्तेमाल किये जा सकते है। समय समय पर पक्षियों की छटनी करना भी उचित होता हैं। पठोरों को लेयर कक्ष में स्थानान्तरण से पूर्व कमजोर , बीमार, नाकारा, कुड़क व अनुत्पादक मुर्गियों की छटनी कर देनी चाहिए। ये कार्य भविष्य में भी समय-समय पर करते रहना चाहिए।

मुर्गियों का टीकाकरणः अण्डे वाली मुर्गियों में 6-8 सप्ताह की अवस्था तक जो टीकाकरण सामान्यतः किये जाते हैं वे हैं- मेरेक्स , आर0डी0एफ0 स्ट्रैन, आई0बी0डी0 इण्टरमीडिएट स्ट्रैन और फाउल पाक्स वैक्सीन द्वारा टीकाकरण। पठोर व वयस्क अवस्थाओं में जो टीकाकरण किये जाते हैं उनमें विषेश हैं- आर0डी0 आर0टू0बी तथा ई0डी0एस0-76। इसके अतिरिक्त अण्डे वाली प्रजातियों के ब्रीडर्स का टीकाकरण आई0बी0डी0 किल्ड वैक्सीन द्वारा किया जाता है। योग्य विशेषज्ञ द्वारा बीमारी से मरे पक्षियों के रोग का पता लगाना तथा उपयुक्त रीति से निष्कासित करने का प्रबन्ध करवाना चाहिए।